

संगीत के माध्यम से सामाजिक जागरण: भारतीय समाज का एक अध्ययन

Manoj Kumar

Independent Researcher (Music), Kathua, J&K, India



Read the Article Online



Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Kumar, M. (2026). Sangeet Ke Madhyam Se Samajik Jagaran: Bhartiya Samaj Ka Ek Adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 80-83

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय समाज में संगीत की परिवर्तनकारी भूमिका का ऐतिहासिक, सामाजिक तथा समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करता है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि संगीत किस प्रकार सामाजिक चेतना को जागृत कर सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में कबीर, मीरा बाई तथा गुरु नानक देव जैसे संतों ने भक्ति-संगीत के माध्यम से जाति-पांति और धार्मिक भेदभाव का विरोध कर समानता एवं मानवता का संदेश दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशभक्ति गीतों ने राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ कर जनमानस को संगठित किया। ग्रामीण समाज में लोकसंगीत ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाने और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक युग में फिल्मी संगीत और जनआंदोलन से जुड़े गीतों ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और राजनीतिक चेतना जैसे मुद्दों को व्यापक मंच प्रदान किया। साथ ही, संगीत-चिकित्सा ने मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक विकास और आध्यात्मिक उन्नयन में अपनी प्रभावशीलता सिद्ध की है। यद्यपि व्यावसायीकरण और नकारात्मक प्रवृत्तियाँ चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं, तथापि समुचित दिशा और नैतिक दृष्टिकोण के साथ संगीत सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और सकारात्मक परिवर्तन का सशक्त साधन बना रह सकता है। यह शोध समग्र दृष्टिकोण से संगीत की सामाजिक भूमिका को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द - सामाजिक परिवर्तन, भारतीय संगीत, सामाजिक जागरूकता, संगीत-चिकित्सा, सांस्कृतिक एकता

भूमिका

सामाजिक परिवर्तन किसी भी समाज की निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जिसमें उसके मूल्य, मान्यताएँ, व्यवहार और संस्थाएँ समय के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। भारतीय समाज, जो विविध भाषाओं, धर्मों, संस्कृतियों और परंपराओं से निर्मित है, उसमें संगीत ने केवल मनोरंजन का साधन होने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगीत भावनाओं, विचारों और अनुभवों की ऐसी अभिव्यक्ति है जो सीधे मन और चेतना को प्रभावित करती है। यही कारण है कि इतिहास के विभिन्न कालखंडों में संगीत सामाजिक जागरण, सुधार और परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बना। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन में कबीर और मीरा बाई जैसे संतों ने अपने भक्ति गीतों द्वारा जाति-पांति और सामाजिक भेदभाव का विरोध किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वंदे मातरम् जैसे गीतों ने राष्ट्रवाद की भावना को सुदृढ़ किया। आधुनिक युग में फिल्मी गीतों, लोकसंगीत और जनआंदोलनों के नारों ने सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक असमानता और राजनीतिक चेतना के प्रश्नों को व्यापक स्तर पर उठाया। वर्तमान समय में भी संगीत सामाजिक अभियानों, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और सांस्कृतिक एकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय समाज में संगीत की परिवर्तनकारी भूमिका का ऐतिहासिक, सामाजिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि संगीत किस प्रकार सामाजिक चेतना को जागृत कर सकारात्मक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करता है।

साहित्य समीक्षा

सामाजिक परिवर्तन और संगीत के संबंध पर अनेक विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया है। भारतीय संदर्भ में यह विषय ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत साहित्य समीक्षा में प्रमुख ग्रंथों और अध्ययनों के आधार पर विषय का विश्लेषण किया गया है।

सबसे पहले भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के संदर्भ में ए. एल. बाशम ने अपनी कृति The Wonder That Was India में यह उल्लेख किया है कि भारतीय परंपरा में संगीत केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि धार्मिक और सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। उनके अनुसार, वैदिक काल से ही संगीत ने सामूहिक चेतना को प्रभावित किया।

भक्ति आंदोलन के संदर्भ में कबीर और गुरु नानक देव की वाणी का विश्लेषण करते हुए विद्वानों ने पाया कि कीर्तन और भजन सामाजिक समानता और धार्मिक सहिष्णुता के प्रभावी माध्यम बने। जॉन स्ट्रैटन हौली ने भक्ति साहित्य पर अपने अध्ययनों में दर्शाया कि संगीत-आधारित भक्ति ने जनसाधारण को सामाजिक बंधनों से मुक्त होने की प्रेरणा दी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संगीत की भूमिका पर बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वंदे मातरम् तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतों को राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक स्रोत के रूप में देखा गया है। इतिहासकारों के अनुसार, इन गीतों ने जनमानस में स्वतंत्रता की भावना को सशक्त किया।

आधुनिक समाज में संगीत और जनसंचार माध्यमों के प्रभाव पर टी. डब्ल्यू. एडोर्नो ने लोकप्रिय संगीत को सामाजिक संरचना से जोड़ते हुए कहा कि संगीत जनमत निर्माण का साधन बन सकता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में फिल्म संगीत पर हुए अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सिनेमा के माध्यम से सामाजिक मुद्दों—जैसे जातीय असमानता, महिला अधिकार, और शिक्षा—को व्यापक मंच मिला।

संगीत और मानसिक/आध्यात्मिक परिवर्तन पर भी शोध उपलब्ध है। संगीत-चिकित्सा के क्षेत्र में हुए अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि संगीत तनाव को कम करने और सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायक है।

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज में संगीत सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी साधन रहा है। हालांकि, अधिकांश अध्ययन किसी एक कालखंड या विशेष आंदोलन तक सीमित रहे हैं। अतः समग्र दृष्टिकोण से विभिन्न ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भों को एकीकृत करते हुए विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य

- भारतीय समाज के विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों (भक्ति आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम, आधुनिक युग) में संगीत की भूमिका का विश्लेषण करना।
- सामाजिक कुरीतियों (जाति-भेद, लैंगिक असमानता, दहेज प्रथा आदि) के विरुद्ध जागरूकता फैलाने में संगीत के योगदान का अध्ययन करना।
- लोकसंगीत, भक्ति संगीत, देशभक्ति गीत तथा फिल्मी संगीत के माध्यम से सामाजिक चेतना के विकास की प्रक्रिया को समझना।
- समकालीन भारत में जनआंदोलनों, सामाजिक अभियानों तथा डिजिटल मीडिया के संदर्भ में संगीत के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- संगीत के माध्यम से मानसिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन तथा सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं का परीक्षण करना।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य: भक्ति आंदोलन और सामाजिक सुधार, स्वतंत्रता संग्राम और देशभक्ति गीत

भारतीय समाज में संगीत ने ऐतिहासिक रूप से सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बनकर कार्य किया है। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के दौरान कबीर, मीरा बाई तथा गुरु नानक देव जैसे संतों ने भक्ति-गीतों और कीर्तन के माध्यम से जाति-पांति, धार्मिक आडंबर और सामाजिक भेदभाव का विरोध किया। उनके संगीत ने समानता, प्रेम और मानवता का संदेश देकर समाज में सुधार की चेतना उत्पन्न की। इसी प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के समय देशभक्ति गीतों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना को जागृत किया। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का वंदे मातरम् और क्रांतिकारी गीतों ने युवाओं को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार इतिहास के दोनों कालखंडों में संगीत सामाजिक एकता और परिवर्तन का प्रभावी साधन सिद्ध हुआ।

लोकसंगीत और सामाजिक जागरूकता: ग्रामीण समाज में लोकगीतों की भूमिका तथा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संदेश

लोकसंगीत भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिबिंब है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में लोकगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक शिक्षा और जागरूकता का प्रभावी माध्यम रहे हैं। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, बिहार आदि राज्यों में विवाह, त्यौहार, खेती-बाड़ी और पारिवारिक अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीत सामाजिक मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित करते हैं। ग्रामीण समाज में लोकगीतों के माध्यम से दहेज प्रथा, बाल विवाह, नशाखोरी, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता जैसी कुरीतियों पर व्यंग्यात्मक और भावनात्मक संदेश दिए जाते रहे हैं। उदाहरण के लिए, कई लोकगीतों में बेटी के महत्व और शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जाता है, जिससे समाज में सकारात्मक सोच विकसित होती है। लोकसंगीत की विशेषता यह है कि यह स्थानीय भाषा और बोली में प्रस्तुत होता है, जिससे उसका प्रभाव सीधे जनमानस पर

पड़ता है। सामूहिक गायन और प्रस्तुतियों के माध्यम से सामाजिक एकता और सहभागिता की भावना भी सुदृढ़ होती है। इस प्रकार लोकगीत ग्रामीण समाज में जागरूकता फैलाने और सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करने का सशक्त साधन सिद्ध हुए हैं।

फिल्मी संगीत और आधुनिक समाज: सामाजिक मुद्दों पर आधारित गीत, जनआंदोलन और सांस्कृतिक एकता

आधुनिक भारतीय समाज में फिल्मी संगीत सामाजिक चेतना को जागृत करने का अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बन गया है। हिंदी सिनेमा के गीत केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, भ्रष्टाचार, देशभक्ति, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता जैसे मुद्दों को व्यापक मंच प्रदान किया। उदाहरण, रंग दे बसंती के गीतों ने युवाओं में सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया, जबकि तारे जमीं पर के गीतों ने शिक्षा प्रणाली और बाल मनोविज्ञान पर संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। फिल्मी गीत जनआंदोलनों में भी प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। देशभक्ति और सामाजिक न्याय से जुड़े गीत रैलियों, अभियानों और सार्वजनिक कार्यक्रमों में एकता और उत्साह का संचार करते हैं। संगीत भाषा, क्षेत्र और धर्म की सीमाओं को पार कर लोगों को एक साझा सांस्कृतिक मंच पर जोड़ता है। इस प्रकार फिल्मी संगीत आधुनिक समाज में न केवल सामाजिक मुद्दों को उजागर करता है, बल्कि सांस्कृतिक एकता और सामूहिक चेतना को भी सुदृढ़ करता है, जिससे सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन की दिशा में जनसहभागिता बढ़ती है।

संगीत और मानसिक/आध्यात्मिक परिवर्तन: संगीत चिकित्सा एवं नैतिक मूल्यों का संवर्धन

संगीत मानव मन और आत्मा को गहराई से प्रभावित करने वाली कला है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम भी है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ और तनावपूर्ण परिस्थितियों में संगीत मानसिक शांति, एकाग्रता और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। वैज्ञानिक अध्ययनों में यह सिद्ध हुआ है कि मधुर संगीत सुनने से तनाव, अवसाद और चिंता में कमी आती है तथा भावनात्मक संतुलन विकसित होता है। संगीत चिकित्सा आज एक मान्य उपचार पद्धति के रूप में विकसित हो रही है, जिसमें संगीत के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ किया जाता है। रोगियों के उपचार में भजन, मंत्र, शास्त्रीय रागों और ध्यान-संगीत का उपयोग मानसिक शांति एवं आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी संगीत व्यक्ति को आत्मचिंतन और आंतरिक शुद्धि की ओर प्रेरित करता है। भक्ति-संगीत, कीर्तन और धार्मिक श्लोकों के संगीतबद्ध पाठ से नैतिक मूल्यों—जैसे करुणा, प्रेम, सहिष्णुता और सत्य—का विकास होता है। भारतीय परंपरा में नाद-ब्रह्म की अवधारणा यह दर्शाती है कि संगीत को दिव्यता से जोड़ा गया है। इस प्रकार संगीत मानसिक संतुलन स्थापित करने के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विश्लेषण एवं चर्चा

संगीत सामाजिक परिवर्तन का प्रभावशाली माध्यम रहा है, जिसका विश्लेषण करने पर इसके अनेक सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट होते हैं। प्रथम, संगीत भावनात्मक स्तर पर लोगों को जोड़ने की क्षमता रखता है। यह भाषा, क्षेत्र और धर्म की सीमाओं को पार कर सामूहिक चेतना का निर्माण करता है। भक्ति काल में कबीर और गुरु नानक देव के भजनों ने सामाजिक समानता और भाईचारे का संदेश दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वंदे मातरम् जैसे गीतों ने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया। आधुनिक समय में फिल्मी और जनआंदोलन के गीत सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाते हैं। द्वितीय, संगीत मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। संगीत-चिकित्सा के माध्यम से तनाव, अवसाद और चिंता में कमी लाई जा सकती है। यह व्यक्ति के भीतर नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच का विकास करता है। सामूहिक गायन और सांस्कृतिक कार्यक्रम सामाजिक सहभागिता को बढ़ाते हैं, जिससे सामाजिक समरसता मजबूत होती है। हालाँकि, संगीत की कुछ सीमाएँ और चुनौतियाँ भी हैं। व्यावसायीकरण (Commercialization) के कारण कई बार संगीत का उद्देश्य केवल मनोरंजन और लाभ कमाना रह जाता है, जिससे सामाजिक संदेश गौण हो जाता है। कुछ लोकप्रिय गीतों में अश्लीलता, हिंसा या भ्रामक संदेश भी पाए जाते हैं, जो युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इसके अतिरिक्त, डिजिटल माध्यमों पर सामग्री की अधिकता के कारण गंभीर और सार्थक संगीत को अपेक्षित ध्यान नहीं मिल पाता। इस प्रकार, संगीत सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन है, किंतु इसके प्रभाव को सकारात्मक दिशा में बनाए रखने के लिए जागरूकता, नैतिक दृष्टिकोण और संतुलित प्रस्तुति आवश्यक है।

सुझाव

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में संगीत की भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रथम, शैक्षणिक संस्थानों में संगीत शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हो सके। द्वितीय, लोकसंगीत और पारंपरिक संगीत विधाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सरकारी और गैर-सरकारी

स्तर पर विशेष योजनाएँ चलाई जानी चाहिए, जिससे हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रह सके। तृतीय, सामाजिक अभियानों—जैसे महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति और शिक्षा—में प्रभावशाली एवं सार्थक गीतों का अधिक उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि जन-जागरूकता व्यापक स्तर पर बढ़े। चतुर्थ, संगीत उद्योग में नैतिक मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए, जिससे अश्लीलता या नकारात्मक संदेशों से बचा जा सके। अंततः, संगीत-चिकित्सा को स्वास्थ्य सेवाओं और सामुदायिक कार्यक्रमों में सम्मिलित कर मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जाना चाहिए। इन उपायों से संगीत सामाजिक समरसता और सकारात्मक परिवर्तन का अधिक प्रभावी साधन बन सकता है।

भविष्य की संभावनाएँ

सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में संगीत की भविष्य की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया, यूट्यूब, पॉडकास्ट और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से संगीत की पहुँच वैश्विक स्तर तक हो गई है। इससे सामाजिक मुद्दों—जैसे पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, मानसिक स्वास्थ्य और मानवाधिकार—पर आधारित गीतों को व्यापक जनसमर्थन मिल सकता है।

भविष्य में संगीत-चिकित्सा का क्षेत्र और अधिक विकसित होने की संभावना है। अस्पतालों, विद्यालयों और सामुदायिक केंद्रों में संगीत को मानसिक स्वास्थ्य सुधार के एक सहायक साधन के रूप में अपनाया जा सकता है। इससे तनाव, अवसाद और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याओं से निपटने में मदद मिलेगी।

लोकसंगीत और पारंपरिक विधाओं के संरक्षण के लिए डिजिटल आर्काइव और सांस्कृतिक परियोजनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। युवा पीढ़ी आधुनिक तकनीक के साथ पारंपरिक संगीत को जोड़कर नवाचार कर सकती है, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहेगी।

इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारतीय संगीत वैश्विक मंच पर सामाजिक संदेश देने का सशक्त माध्यम बन सकता है। इस प्रकार, भविष्य में संगीत सामाजिक समरसता, मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन और वैश्विक शांति के लिए और अधिक प्रभावी भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संगीत भारतीय समाज में केवल कला या मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम रहा है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भक्ति आंदोलन के संतों ने संगीत के माध्यम से जाति-पांति, धार्मिक आडंबर और सामाजिक भेदभाव का विरोध कर समानता और मानवता का संदेश दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशभक्ति गीतों ने राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर जनमानस को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया। ग्रामीण समाज में लोकसंगीत ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाने और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आधुनिक युग में फिल्मी संगीत और जनआंदोलनों के गीतों ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और राजनीतिक चेतना जैसे मुद्दों को व्यापक मंच प्रदान किया। साथ ही, संगीत-चिकित्सा ने यह सिद्ध किया है कि संगीत मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक विकास और आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक है। हालाँकि व्यावसायीकरण और नकारात्मक सामग्री जैसी चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, फिर भी उचित दिशा और नैतिक दृष्टिकोण के साथ संगीत समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की असीम क्षमता रखता है। निष्कर्षतः, संगीत भारतीय समाज में सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक एकता और नैतिक जागरण का स्थायी आधार बनकर भविष्य में भी परिवर्तन की प्रक्रिया को सशक्त करता रहेगा।

संदर्भ सूची

- ए. एल. बाशम (1954). *The Wonder That Was India*. London: Sidgwick & Jackson.
- जॉन स्ट्रैटन हौली (1984). *Songs of the Saints of India*. Oxford University Press.
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1910). *Gitanjali*. Macmillan.
- टी. डब्ल्यू. एडोर्नो (1941). *On Popular Music*. Studies in Philosophy and Social Science.
- बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1882). *Anandamath*.
- वर्मा, सतीश. (2004). *संगीत चिकित्सा*. शाहदरा दिल्ली : राधा पब्लिकेशन
- शर्मा, डॉ. महारानी. (2022). *संगीत चिकित्सा*. नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
- प्रांजपे, डॉ. श्रीधर शरचंद्र (2006). *भारतीय संगीत का इतिहास*. वाराणासी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन